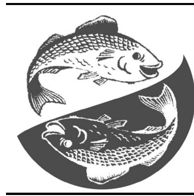
तीन जेठ एगारहम माघ

जगदीश प्रसाद मण्डल

तीन जेठ एगारहम माघ

जगदीश प्रसाद मण्डल



श्रुति प्रकाशन
दिल्ली

ISBN : 978-93-80538-88-4

दाम : २०० रू. मात्र

पहिल संस्करण : २०१२

गाम-पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी

मिथिला, बिहार

पिन- ८४७४१०

मोबाइल- ९९३१६५४७४२

श्रुति प्रकाशन

रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.

दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११) २५८८९६५७

Website:http://www.shruti-publication.com

e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at: Ajay Arts, Delhi-110002

Typeset by Sh. Umesh Mandal

Distributor :

Pallavi Distributors, Ward no- 6, Nirmali (Supaul),

मो.- 09572450405, 09931654742

Teen Jeth Egarham Magh : Anthology of Maithili Song, ghazal and sher by Jagdish Prasad Mandal.

जगदीश प्रसाद मण्डल

जन्म- ५ जुलाइ १९४७

पिताक नाओं : स्व. दल्लू मण्डल, माताक नाओं : स्व. मकोबती देवी, पत्नी- श्रीमती रामसखी देवी, पुत्र- सुरेश मण्डल, उमेश मण्डल, मिथिलेश मण्डल। मातृक- मनसारा, घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा।

मूलगाम- बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला-मधुबनी, (बिहार) पिन- ८४७४१०

मोबाइल- ०९९३१६५४७४२

शिक्षा- एम.ए. (हिन्दी आ राजनीति शास्त्र) मार्क्सवादक गहन अध्ययन। हिनकर कथामे गामक लोकक जिजीविषाक वर्णन आ नव दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होइत अछि। गामक जिनगी लघुकथा संग्रह लेल विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११क मूल पुरस्कार आ टैगोर साहित्य सम्मान २०११; एवं बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह ‘‘तरेगन’’ लेल बाल साहित्य विदेह सम्मान २०१२ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार रूपेँ प्रसिद्ध) प्राप्त।

साहित्यिक कृति-

उपन्यास- (१) मौलाइल गाछक फूल (२००९), (२) उत्थान-पतन (२००९), (३) जिनगीक जीत (२००९), (४) जीवन-मरण (२०१०), (५) जीवन संघर्ष (२०१०)

नाटक- (१) मिथिलाक बेटी (२००९), (२) कम्प्रोमाइज (२०१०), (३) झमेलिया बिआह (२०१२)

लघुकथा संग्रह- (१) गामक जिनगी (२००९), (२) अर्द्धांगिनी... सरोजनी... सुभद्र... भाइक सिनेह इत्यादि (२०१२), (३) सतभैंया पोखरि (२०१२)

बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह- (१) तरेगन (२०१०)

विहनि कथा संग्रह- बजन्ता-बुझन्ता (२०१२)

एकांकी संग्रह- (१) पंचवटी (२०१२)

दीर्घकथा संग्रह- (1) शंभुदास (२०१२)

कविता संग्रह- (१) इंद्रधनुषी अकास (२०१२), (२) राति-दिन (२०१२)

गीत संग्रह- (१) गीतांजलि (२०१२), (२) तीन जेठ एगारहम माघ (२०१२)

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल

फुलवाड़ी लगौनिहारकेँ

एवं

नव विहान अननिहारकेँ

समर्पित

अनुक्रम-

२८. धार संग नाह ....
२९. मन मशीन ....
३०. खट-मीठ ....
३१. झोंकमे ....
३२. पबिते पैग ....
३३. हेल-मेल जाधरि ....
३४. कौशल जखन ....
३५. उमकीमे उमकि ....
३६. जिनगीक कुन्ज ....
३७. सत-चित ....
३८. पड़िते पएर ....
३९. अहाँ किअए ....
४०. घट-घट घोंट ....
४१. जहिना बारह ....
४२. दुनियाँ घोड़ाएल ....
४३. बहलि बहील ....
४४. हलचल जिनगी ....
४५. टकटक ताक ....
४६. भीख मांगि ....
४७. बकरी खुट्टी ....
४८. अमरा अँचार ....
४९. घरे-घरे ....
५०. बेटी किअए ....
५१. मनक भाव ....
५२. सिरजन सिर ....
५३. दूधक भूखल ....
५४. संगे-संग ....
५५. चोटी छुबै ....
५६. खेल-खेलाड़ी ....
५७. ककोड़बा ....
५८. सोर बनि ....
५९. सेज-सिंगार ....
६०. जएह लूरि ....
६१. जोति हर ....

गजल

१

भूत बनि भुतिआएल अछि
भविष बनि पछताएल अछि

सोझ रहने की भेटतह
टेढ़ बनि उजिआएल अछि

पानि सन हम बहि गेल छी
दूध सन उधिआएल अछि

छै टका बलगर जगतमे
आब ई फरिछाएल अछि

संग खटलौं देखू मुदा
घर हुनक भरिआएल अछि

जे मरल देशक नामपर
नाँ हुनक कतिआएल अछि

मात्रा क्रम---हरेक पाँतिमे दीर्घ-लघु-दीर्घ-दीर्घ + दीर्घ-दीर्घ-लघु-दीर्घ

२

जँ हमरा देब एकौटा बचन सजनी
तँ कम हेबे करत मोनक दहन सजनी

अहाँ किच्छो करब किछु नै चलत ऐठाँ
बहुत कठिनाह छै पेटक भरन सजनी

अहाँ किच्छो करब किछु नै रहत ऐठाँ
करैए ओ तँ अपने अपहरण सजनी

जँ जेबै गेहमे हुनकर तँ लागत जे
लए लेलकै अपन हमरा शरण सजनी

लघु-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ + लघु-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ + लघु-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ

३

भनभनाइत मन तनतनाए लगै छै
बड़ड बेसी आब भरिआए लगै छै

चोर जे छै से तँ चोरे रहत सदिखन
भागि ने सकलासँ खिसिआए लगै छै

देश छै नीके मुदा नेता बिगड़ि गेलै
भोट पबिते ओ तँ पगलाए लगै छै

लोक हमरा कहि रहल बुढ़बा मुदा ई
बूढ़ रहने घर तँ उजिआए लगै छै

मात्रा क्रम----दीर्घ-लघु-दीर्घ-दीर्घ + दीर्घ-लघु-दीर्घ-दीर्घ + दीर्घ-लघु-दीर्घ-दीर्घ
मने बहरे रमल।

४

गाछक रंग बदलि बहल छै
मौसम संग सुधरि रहल छै

थल-कमल जकाँ कहियो छल
गाढ़ लाल-उज्जर जे बनल छै

तहिना फूल-फल कोढ़ी जकाँ जे

झरि-झरि कोनो फड़ो फड़ल छै

आशा आश लगा-लगा कऽ रहतै
जीत अपराजित ओ हँसल छै

सुधरि रूप बदलि चालि सेहो
कारी काजर चमकि उठल छै

लत्ती पानि रूप बदलि बदलै
थल-कमल बनैत बढ़ल छै

तहिना लत्ती अपराजित भए कऽ
जगदीशकेँ गछाड़ि धड़ल छै

५

ठोरक रूप देखैत चलल छै घुरत कोना
मुँहक हँसी सेहो बिसरल छै घुरत कोना

सूर-तान भजैत चलल ककरा की कहतै
छाती केना दलकि रहल छै घुरत कोना

मुँहक कननी केहेन अबै छै कूही भए कऽ
ठोरक रूप जेना बदलल छै घुरत कोना

जिनगी जेकर जेहेन रहै छै घुरछी लेने
छाती तेहने तेकर बनल छै घुरत कोना

हलसि-कलशि कहैत रहै बीच सड़कपर
ऐना पारदर्शी बनि बेकल छै घुरत कोना

एक्कभग्गू शीशा रहतै हँसी केहेन एतै यौ
देखि-सूनि हँसि डेग उठल छै घुरत कोना

पालिस लगिते शीशा झल अन्हार जे बनतै
अन्हारेमे जगदीश बढ़ल छै घुरत कोना

किछु शेर

सूखल धरती जतए पड़ल छै
खेतक अर्थी तैठाँ उठल छै
कठपिंगल बनि रहि गेल छल जे
देखू ओकर नोरे खसल छै
….
ई झोंक जुआनी केर झोंकै छै

उष्मासँ हुनक मोनो तँ गुमसै छै

गाछक रंग बदलि......

गाछक रंग बदलि रहल छै
मौसम संग सुधरि रहल छै।

थल-कमल जकाँ कहियो
गाढ़-लाल-उज्जर बनै छै।
तहिना फूल-फल कोढ़ि जकाँ
झरि-झरि कोनो फलो बनै छै।

गाछक रंग बदलि रहल छै
मौसम संग.......।

आशा आश लगा-लगा
जीत अपराजित बनैत रहै छै।
सुधरि रूप बदलि चालि
कारी काजर चमकि उठै छै।
गाछक रंग बदलि रहल छै
मौसम संग.......।

लत्ती पानि रूप बदलि
थल-कमल बनैत रहै छै
तहिना लत्ती अपराजित
गाछ बनि गछाड़ि धड़ै छै।
गाछक रंग बदलि रहल छै
मौसम संग.......।

मुँहक हँसी केहेन......

मुँहक हँसी केहेन अबै छै
ठोरक रूप देखैत चलू।
छाती केना दलकि रहल छै
सूर-तान भजैत चलू।
मुँहक हँसी केहेन अबै छै
ठोरक रूप.......।

जिनगी जेकर जेहेन रहै छै
छाती तेहने तेकर बनै छै।
हलसि-कलशि कहैत रहै छै
ऐना पारदर्शी बनैत रहै छै।
मुँहक हँसी केहेन अबै छै
ठोरक रूप.......।

जखने पालिस शीशा लगतै
झल अन्हार बनिते रहतै।
झल अन्हार अन्हार बदलि
एक्कभग्गु बनि शीशा रहतै।
मुँहक हँसी केहेन अबै छै
ठोरक रूप.......।

देखि-देखि ओ सुनि-सुनि कऽ
हँसैत डेग उठबैत चलू।
मुँहक हँसी केहेन अबै छै
ठोरक रूप.......।

झोंक जुआनी झोंकए......

झोंक जुआनी झोंकए लगै छै
उष्मा पाबि उमसए लगै छै।
झोंक जुआनी.......।

जाधरि सिर सृजै शिशिर छै
हार-मासु सिहरैत रहै छै।
सुनिते कोइली कुहुकि वसंती
भनभनाइत मन तनतनाए लगै छै।
झोंक जुआनी.........।

रंग-विरंगक वन-उपवनमे
रंग-रंगक फूल फुॅलए लगै छै
पाबि रस मधुमाछी सिरजए
कोनो बिख चुभकैत रहै छै।
झोंक जुआनी.......।

बैसले-बैसल नाचि......

बैसले-बैसल नाचि रहल छै
गुड़-चाउर मन फाँकि रहल छै।
सिसकैत-सिहरैत कतौ देखि
संग मिलि कऽ कानि रहल छै
बैसले-बैसल.......।

उफनैत-उधियाइत धार देखि
संग मिलि कऽ दाबि रहल छै।
घट-घट घाट बना-बना
धार-विचार बहा रहल छै।
बैसले-बैसल.........।

गुमकीमे बौआए......

गुमकीमे बौआए रहल छी
औल-बौल टौआए रहल छी।
गुमकीमे..........।

घाम-पसिना बहि रहल छै
आश-निराश चलि रहल छै।
धक्कम-धुक्कम चलि रहल छै
औलाइत-बौलाइत मन कहै छै।
गुमकीमे..........।

कखनो अन्हर-बिहारि देखै छी
झाँट-पानि बिच पड़ए लगै छी।
गुमकीमे............।

भूत बनि भुतिआएल......

भूत बनि भुतिआएल छी
मित यौ बनि भूत भुतिआएल छी।

संगे-संग जगलौं
संगे-संग उठलौं
संगे-संग चालि चलि
संगे रहि हराएल छी।
संगिया मरि गेल
हम भुतिआएल छी।

केकरा कहबै भूत भविष्य
वर्त्तमान छिड़िआएल छै।
रग्गर बिच फक्कर बनि
लाजे-पड़ाएल छै
भूत बनि भुतिआएल छै
बनि भूत भुतिआएल छै।

सुखले मे सभ......

सुखले मे सभ पिछड़ि रहल छै
मुँह-कान सभ तोड़ि रहल छै।

सूखल जानि जतए पएर रोपै छै
काह-कूह सभ ततए जमल छै।
सुखले मे सभ.....।

सूखल धरती जतए पड़ल छै
झल-फल नजरि ततए जाइ छै।
सुखले मे सभ......।

अन्हर-जाल फरिच्छ मानि कऽ
भोर-भुरुकबा सूर्य बुझै छै।
सुखले मे सभ......।

दीनक दिन केना......

दीनक दिन केना कऽ चढ़तै
मन कहाँ कहियो मानै छै।
रतुके काजे दिनो गमा कऽ
बढ़ती कहाँ तानि पबै छै।
दीनक दिन केना.....।

बिनु तनने घोकचि-मोकचि जौं
जाड़ माघ अबैत रहै छै।
चैतक चेत चेतौनी ओहिना
सिर जेठ धड़ैत रहै छै।
दीनक दिन केना.....।

तीन जेठ एगारहम माघ
तीनू लोक देखैत सुनै छै।
देह-पसेना सुरकि चाटि कऽ
माघे ने माघो कहबै छै।
दीनक दिन केना.....।

कोढ़ पकड़ि......

कोढ़ पकड़ि कोढ़ी कहै छै
कोंढ़िया कोढ़ पकड़ने छै।

केना कऽ फड़बै-फुलेबै
रेहे-देह पकड़ने छै।
कोढ़ पकड़ि.....।

देखलोसँ नहि देखि पड़ै छै
सुनलोसँ नहि सुनि पबै छै।
टीश-पीड़ा टीशा पीड़ा
मन घोर-घोर बनौने छै।
कोढ़ पकड़ि.....।

नहि कहियो फड़बै-फुलेबै
झखि-झखि आशा तोड़ने छै।
सकारथ भऽ अकारथ बनि-बनि
दिन-राति अन्याय करै छै।
कोढ़ पकड़ि.....।

जाल समाज......

जाल समाज महजाल बनल छै
हाना बनि परिवार सजल छै।
जाल समाज महजाल बनल छै।

बिनु नाप हाना बनल छै
हाना मध्य खाना सजल छै।
हाना बूझि खाना लपकि
खानामे जा-जा फँसै छै।
मीत यौ, जाल समाज.....।

जान गमाएब खेल खेलि
बचैक नहि उपाए करै छै
ऊपर कूदि-कूदि फानि चाहि
गोरिया-गोरिया गुहारि करै छै।
मीत यौ, जाल समाज.....।

मीत यौ, देहक पानि......

मीत यौ, देहक पानि तखन फुलाइ छै
कोढ़ी बनि काज रूप लगै छै।
देहक पानि तखन फुलाइ छै।

कोढ़िये ने फुलो-फड़ो संग
बाँहि पकड़ि संकल्प कुदै छै।
देहक पानि....।

जाधरि मन संकल्पित नहि
ताबे केना उद्देश्य कहबै छै
संकल्पे ने तन-मन बीच
सीमा दइत डेग बढ़बै छै।
मीत यौ, देहक पानि....।

काम-धाम जहिना बनै छै
तहिना ने कर्मो-धर्म कहबै छै
धर्मे ने धारण करैत
पथ-पानि चढ़बैत चलै छै।
मीत यौ, देहक पानि.....।

आश प्रेम संग......

आश प्रेम संग झूमि रहल छै
लाल टमाटर बाजि रहल छै।
आश प्रेम......।

वन बीच सन्यासी जहिना
झींक दऽ दऽ जात नचबै छै।
निआस कहाँ छोड़ि संग
चिक्कस बनि-बनि भूमि भरै छै।
आश प्रेम......।

लाल टमाटर बनि सन्यासी
खटमीठ रूप धड़ैत रहै छै।
नै मीठ तँ खट्टो नहियेँ
अपन नाओं सुनबैत कहै छै।
आश प्रेम......।

गीत गीता गाबि सन्यासी
भगवत भजन करैत रहै छै।
सबूर पाबि सबर सबरी
मरितो राम एबे करै छै।
आश प्रेम संग......।

विषय दस......

विषय दस सिलेबस प्रवेश
दसो दिशा देखैत रहै छै।
त्रिभूज-ज्यमिति तहिना
गीत व्यास गबैत रहै छै।
विषय दस......।

सून अप्पन हिस्सा कहि-कहि
ठेहुन रोपि अड़ल रहै छै।
अंकसँ हिसाबो तहिना
रथ जिनगी घिचैत चलै छै।
रथ जिनगी......।

आगू भलहिं काटि-छाँटि
घटबी घाट बढ़ैत चलै छै।
होइत-हबाइत धकिया-धुकिया
हिस्सा अपन कहबैत चलै छै।
हिस्सा अपन.....।

धर्मक फूल......

धर्मक फूल फुलेबे करतै
बनि फुलबाड़ी सजबे करतै
धर्मक फूल......।

सान धार बनबे करतै
काम-धाम बनबे करतै।
भीड़-कुभीड़ धाम बीच
असंख्य-शंख उठबे करतै।
धर्मक फूल......।

धड़ घनेरो धार घनेरो
रूप कृष्ण कहबे करतै
बान पकड़ि वाणी बदलि
निसाँस-साँस भरबे करतै।
बनि फुलबाड़ी सजबे करतै।
धर्मक फूल......।

सहस्त्र नाओं बनि-बनि
माला जप होइते रहतै।
कुरू-पाण्डु बीच सदएसँ
नाद-शंख बजबे करते।
नाद-शंख बजबे करतै।
हे यौ मीत,
धर्मक फूल......।

किछु ने करै छी……

किछु ने करै छी, मीत यौ
किछु ने करै छी।
मीत यौ किछु ने करै छी।

गेड़ू-चौक मारि गनगुआरि बनि
दिन-राति रमल रहै छी।
मीत यौ……।

जरि-मरि गेल मन-कामना
समए संगम संग रमल छी
मीत यौ……।

बोनक बाट आगू छै
उत्तरे-दछिने धार बहल छै
घटि-घटि घटिया घाट बनि
घोंटे-घोट पीबैत रहै छी
मीत यौ……।

ससरि-ससरि ससरति रहै छी
गाछ उतरि धरती पकड़ि
लछमी-नाग कहबैत रहै छी
मीत यौ……।

अपने पाछू.....

अपने पाछू बौआइत रहै छी
मीत यौ, अपने पाछू बौआइत रहै छी।
दिन-राति ढहनाइत रहै छी
राति-दिन गन्हाइत रहै छी
मीत यौ, अपने पाछू......।

पछुआ बनि पछुआर पहुँचिते
पेट-पीठ, पाँजर देखै छी
हड्डी छाती छिटैक-सिसैक
पौंखड़ा बनि सूर-तान भरै छी
पौंखड़ा बनि सूर-तान भरै छी
मीत यौ, अपने पाछू......।

जूआ-जुआ, जूआ-जुआ
नांगड़ि ऐँठि चलैत रहै छी
लादक ऊपर लादि-लादि
टूटि-टूटि गीरह बनैत रहै छी
मीत यौ, अपने पाछू......।

अपना के अप्पन बूझि-बूझि
अपने पाछू ओझराएल रहै छी
अपनापन भाव बिनु बुझितो
अगुआर-पछुआर नाचि रहल छी।
मीत यौ, अपने पाछू......।

उठी-बैसी......

हमर तेही मे नाम, हमर तेही मे नाम।
हमरा उठलेसँ काम, हमर बैसलेसँ काम
हमर तेहीमे नाम......।

उठी लेब कि बैठी, बाजू-बाजू धड़-धड़ाम
उठी लऽ जँ बैसब, आ कि बैठी लऽ जँ उठब
छुबिते भरब पद पराम
हमर तेहीमे नाम, हमर तेहीमे काम।

खेल खेलाड़ी खेलि खेल
बाल-बोध लिखबै छै नाम
खेल जिनगीक खेला-खेला
मृत-अमृत पाबि सूरधाम।
हमर तेहीमे नाम हमर तेहीमे काम
हमरा उठले से काम, हमरा बैसले सँ काम।

गर-मुड......

गर-मुड़ बोझ बनल छै
मीत यौ, गर-मुड़ बोझ बनल छै।
पाबि धार साबे जेना
बाणिक बानि धड़ैत रहै छै
कोमल-किसलय किछु ने बूझि
पछुआ रूप धड़ैत रहै छै।
गर-मुड़.......।

तहक-तह तहिया-तहियासँ
छल-छल छल्ली बनैत रहै छै
समटनिहार संगी जेहेन-जहिया
तेहने तेहेन बोझ बनै छै।
गर-मुड़.......।

गर-मुड़ाह ठनि-बनि-बनि
गर-मुड़ाह चालि चलै छै।
गर-मुड़ाह गीत गाबि-गाबि
चालि कोइली चलै छै।
चालि कोइली चलै छै।
गर-मुड़.......।

मनक बेथा......

मनक बेथा कहब केकरा, हे बहिना
सभ दिनसँ होइते एलै।

बनि-बनि बेथा कथा बनि-बनि
मरण-करण बनैत एलै।
मृत-अमृत रगड़ि-रगड़ि
दीन राति कहैत एलै।
मनक बेथा...... ।

खेरहा बनि-बनि कथा-पिहानी
राति-दिन भूकैत एलै।
पेट वायु जहिना भूकै छै
खरही खेरहा कहैत एलै।
मनक बेथा...... ।

मोटा तर देह थकुचा-थकुचा
पाड़ि ठोह कनैत एलै।
कुहरि-कुहरि कानि-कानि
आदियेसँ कहैत एलै।
मनक बेथा...... ।

रहल नै.....

रहल नै तकनिहार मीत यौ
नै रहल तकनाहार।
तकतियान अपने सिर चढ़ि-मढ़ि
रहल नै देखिनिहार, मीत यौ
रहल नै......।

रहल सभ दिन ताक तकैमे
धाक अपन पकड़ैपर।
जमिते धाक धकेल-धकेल
ठेल खसाओल धरतीपर।
मीत यौ, ठेल खसाओल धरतीपर
रहल नै......।

हेरि-हेर, हरणि हरण
अबैत रहल बनि-बनि अन्हार
घेरा-घेरि मछार बान्हि-बान्हि
पटकि बैस छातीपर।
मीत यौ, पटकि बैस छातीपर।
रहल नै......।

पकड़ि समए......

पकड़ि समए संकल्प नै ठानब
गति कर्म पेबै केना?
बिनु बूझल बिनु बूलि बटोही
घन-सघन बुझैत जेना।
पकड़ि समए......।

ओर-छोड़ पकड़ि-पकड़ि
काम-कर्म पहुँचै जेना छै
संग श्रम-समए मिलि तहिना
सुफल-फल पाबै तेना छै।
पकड़ि समए......।

बीच संगम श्रम ओ समए
खुशी-खुश खुशिआइ जेना छै
पाबि संग संकल्प तहिना
धर्म-कर्म सिरजैत चलै छै।
पकड़ि समए......।

गनगनाइत कर्म गमगमाइत तहिना
सागर-झील टपबे करै छै।
झील-झिलहोरि सरोवर तहिना
जिनगीक सान चढ़बे करै छै।
पकड़ि समए......।

सतरंग ऐ......

सतरंग ऐ संसारमे
समरस रंग धड़ैत रहै छै।
धार-कोन अन्हार-बिहाड़ि
राति-दिन पेबैत रहै छै।
सतरंग ऐ......।

कहि सुलक्षण बनि कुलक्षण
घटिया घाट घटैत रहै छै।
जुआ जोति पछुआ पकड़ि
दब-उनार करैत रहै छै।
सतरंग ऐ......।

सिनेह सिनेहिल सहरि-बहटि
गारा-जोड़ करैत रहै छै।
सिरजमान होइए जतए
काँट-गुलाब हँसैत रहै छै।
सतरंग ऐ......।

संग मिलि मधुर डंक जेना
सूर-तान भरैत रहै छै।
रानी-बीच मधुरानी तहिना
पान मधु करबैत रहै छै।
सतरंग ऐ......।

दुनियाँक जेहने......

दुनियाँक जेहने मंच मंचबै,
तेहने ने रंगमंचो बनै छै।
पात्र बनि जेहेन पाट खेलबै
देखिनिहारो तेहने देखै छै।
दुनियाँक जेहने......।

चाहै सभ छै चैन चीत
दुख-भुख दुनियाँ सेहो कहै छै।
सुख सुखाएल सूतल-पड़ल
सिर संजीवनी भेटै कहाँ छै।
सिर संजीवनी......।
दुनियाँक जेहने......।

हरि अनंत हरि कथा अनंता
हँसि गीत भागवत गबै छै।
हेरि शक्ति शक्ति हरीक
बाघ चढ़ि भगवती कहै छै।
बाघ चढ़ि......।
दुनियाँक जेहने......।

चढ़ि अन्हार......

चढ़ि अन्हार पख भरि-भरि
अमवसिया कहबैत अबै छै।
तहिना ने इजोरो बढ़ि-बढ़ि
मास पूब कहबैत चलै छै।
चढ़ि अन्हार......।

काटि इजोर कपचि-सपचि
पून प्रकाश पाबैत कहै छै।
खेल जिनगीक खेलाड़ी
चढ़ि-चढ़ि रंगमंच कहै छै।
चढ़ि-चढ़ि......।

जस-जसोदा भेद बिनु बुझने
लीला धड़धड़बैत करै छै।
तीत-मीठ फल फलाफल
सिर चढ़ि सिरताज कहै छै।
सिर चढ़ि......।

एक विष……

एक विष जहान जहर
जौहरी दोसर जोहि अनै छै।
अजोह सोहि जग-जागि
बीस ज्ञान कहबए लगै छै।
विश्व ज्ञान कहबए लगै छै।
एक विष……।

सुख-दुख संगे संग चलि
पटका-पटकी करैत रहै छै।
अपन-अपन रस्ता पकड़ि
दिन-राति सन्हि मारि करै छै।
दिन-राति सन्हि मारि करै छै।
एक विष……।

निसां विष खिस्सा विष
कथा विष बतकथा विष
बिसाइत विष बिसबिसा
देह बिखाह बनबै छै।
भाय यौ, देह बिखाह बनबै छै।
एक विष……।

पेटक ताप......

पेटक ताप जहिना तपै छै
तपै छै तहिना मनक ताप।
वेद-पुरण मिलित मीलि
एक वरदान एक अभिशाप।
भाइ यौ......।

तपैक तप तपस्या जहिना
सभकेँ तपैक अछि दरकार।
बिनु तापे तप केना तड़तै
पेते केना उचित-उपकार।
भाइ यौ......।

विलपि-विलपि भगवत मंगै छै
बीच व्यास भागवत देखै छै।
शक्ति पाबि शालीनी जहिना
सिंह सवार शंख फूकै छै।
भाय यौ......।

जेहन मुँह......

जेहन मुँह तेहन हँसी
सभ दिन हँसैत एलैए।
मुँहक जेहन गढ़नि-मढ़नि
तेहने तान भरैत एलैए।
तेहने......।

जाधरि डोर नै बनि-बनि
घास साबे कहबैत एलैए।
बनिते डोरी समेटि-बटोरि
गृह-वास कहबैत एलैए।
गिरह-वास कहबैत एलैए।
गिरह-वास......।

जीह-दाँत सभ संग पूरै छै
आँखि-कान सभ संग एलैए।
लहरि बीच लहरि-लहरि
हास-हँसी हँसैत एलैए।
हास-हँसी......।

धार संग नाह......

धार संग नाव तखने चलै छै
धार जलदार बनल रहै छै।
जल-जलदार......।

देख मानसून लपकि-झपकि
धरा-धार बनबैत रहै छै।
ओद्र आद्रा पाबि पबिते
मजि मजरि मोजर धड़ै छै।
मजि मजरि......।

जेना-जेना मनसून पबै छै
तेना-तेना नाव धार चलै छै।
पूरबा-पछबा झोंक पाबि-पाबि
मन-तेज गतिआइत चलै छै।
मन्द तेज......।

गति धार जलधार जहिना
मतियो तहिना मनसून चलै छै।
गति-मति कखनो संग-साथ
तँ कखनो झहरैत रहै छै।
तँ कखनो......।

मन मशीन.....

मन मशीन मंत्रणा करै छै
युग-परिवर्तित हेबे करतै।
सभ दिनसँ होइते एलैए
सभ दिन हेबे करतै।
मन मशीन......।

मथि-मथि मन मशीन बनि
गति तेज हेबे करतै
साधन युक्त परिवार जहिना
धरा-धार बहबै करतै।
धरा-धार.....।

एक अलंग मशीन जिनगीक
दोसर नीति कहबे करतै
नीति-अनीति कुनीति बनिते
एक-सँ-एक लड़बे करतै।
एक-सँ-एक......।

खट-मीठ......

खट-मीठ बनि-बनि चटलौं
सुआद आम केना पेबै यौ
खट-मट खरकैट-खरकैट
चिक्कन केना बनेबै यौ।
चिक्कन केना...... ।

तेतरि रोपि तेहेन लगेलौं
गुड़-आम संग पेलौं यौ
रंग बदलि सुआदो बदलि
कृत्रिम प्रकृति कहेलौं यौ
कृत्रिम...... ।

जेहने फल पेलौं तेतरिक
तेहने गढ़ि हवा बनेलौं यौ
चर्क-कुष्ट निमंत्रित कऽ कऽ
रोग-मराएल बनेलौं यौ
रोग-मराएल...... ।

झोंकमे......

झोंकमे झोंका गेलौं, मीत यौ
छोड़ि जिनगी उड़िया गेलौं।
झोंकमे......।

पार नै पाबि गुन-गुना
धन-धरम किछुओ ने पेलौं।
मान-दान घाट घटि-घटि
अपसोचमे नहा गेलौं
झोंकमे......।

नै जानि दुनियाँ-दिवाना
भरल दिवाना दुन्यिाँ पेलौं।
प्रेमी-प्रेम पकड़ि-पकड़ि
अपने तँ किछुओ ने पेलौं।
मीत यौ, झोंमे......।

बिनु प्रेम खाली नै दुनियाँ
राधि-अराधि किछुओ ने पेलौं
मूंडे-मूंडे मति-विमति बीच
सुमति-कुमति सगतरि पेलौं।
मीत यौ, झोंकमे.......।

पबिते पैग......

पबिते पैग पिआलिक
घोड़चालि चालि धड़ए लगै छै।
छान-पगहा बीच घोड़ाएल
घोड़छान चालि चलै छै।
घोड़छान......।

उठिते दोसर पैग-पग
सिंह-सिंहासन सजबए लगै छै।
कुदैक-कुदैक फानि-फना
फन-फना डुमबए लगै छै।
फन-फना......।

चढ़ि-चढ़ि डंक डकडका
गद-गधैया पकड़ए लगै छै
ता-थइ, ता-थइ नाच-नाचि
गाम गदह करए लगै छै।
गाम गदह......।

हेल-मेल जाधरि.....

हेल-मेल जाधरि नै पकड़ब
जिनगीक कोनो भरोस नै।
रंग-बिरंग सरोवर सगर छै
पार जेबाक संतोष नै।
हेल-मेल......।

कोनो थीर, जलजलाइत कोनो
जुआरि भरल छै सजल-धजल।
पबिते पेट उनटि-सुनटि
देखए रूप जीअल-मरल।
हेल-मेल......।

दूर-दूर, हटि-हटि सजल छै
दुर्गम दुर्ग सिरजैत रहै छै।
अन्हर-विहाड़िक झोंक पाबि
उनटा-पुनटा नाव चलबै छै।
हेल-मेल......।

कौशल जखन.....

कौशल जखन कोसल बनै छै
कोसलिया एबे करतै।
लाख परयास केलो पछाति
ढंस घर हेबे करतै।
कौशल...... ।

कोसल असगर नै पनपै छै
पनपै छै दोसर-तेसर।
चालि कुचालि धड़ि पकड़ि
भूमि बनैत रहै छै उसर।
कौशल...... ।

उसर पाबि उसरि-उपटि
घर परिवार समाज उसरै छै
ऊपरे-ऊपर छीटि अछीनजल
फूकि शंख काल भगबै छै।
कौशल...... ।

उमकीमे उमकि......

उमकीमे उमकि गेलै
भाव भँवर भसिया गेलै।

अबिते उमकी चित-वृत्ति
रमकीमे रमकए लगै छै।
अतल-गहन गहन-अतल
पाबि-पाबि बौराए लगै छै।
पाबि-पाबि......।

तीले-तील तिलकि-तिलकि।
कौओ बेरागी बनै छै
कल्प-कल्प रमकि झुमकि।
अनजनुआ कहबए लगै छै
अनजनुआ......।

उमकि-उमकि लपकि झपकि
लोल-बोल धड़ए लगै छै।
बिनु रंग-रूप बदलनौं
कोकिल स्वर भरै छै।
कोकिल स्वर......।

जिनगीक कुन्ज......

जिनगीक कुन्ज भवनमे
बिहार कुन्ज करए लगै छै।
दुनियाँक भवसार बीच
भव आनन बनबए लगै छै।
भव आनन......।

आनन-फानन बीच-बीच
हजार आँखि देखैत रहै छै।
सरमे-भरमे चुनि-चानि
सागर भव भरैत रहै छै
सागर भव......।

आँखि बीच अँखिया-अँखिया
डिम्ह डिम्हा भाँगैत रहै छै।
क्षीर-नीर निखड़ि-न्खिड़ि
घाटे-घाट चुनैत रहै छै।
घाटे-घाट......।

सत-क्ति......

सत-चित आनन-फाननमे
भव आनन बिलटि गेलै।
शील बनि शीला चढ़ा
लोढ़ि-बीछि रगड़ए लगलै।
लोढ़ि-बीछि......।

वाण-वाणि चेत-अचेत
चाल-चालि चलबए लगलै
बीचमान बनि बिचमानि
नीर-छीर मिलबए लगलै।
दूधे-पानि मिलबए लगलै।
लोढ़ि-बीछि......।

मुख-बिमुख पथ पथरा
गुआरि गर लगबए लगलै।
आनन चित सरि-सरिया
ढुलकि ढोल बजबए लगलै।
ढुलकि ढोल बजबए लगलै।
लोढ़ि-बीछि......।

पड़िते पएर......

पड़िते पएर हवा पोखरि
डेगे-डेग डगरए लगै छै।
झील-मिलि, हिल-मिलि बानि
पकड़ि बाँहि संगरए लगै छै।
पड़िते पएर......।

धक्कम-धुक्का मुक्कामे जहिना
धक्का-धुक्की चलए लगै छै।
सिहक्ति नाद चिहकि छाती
धरा धार धड़धड़बए लगै छै।
पड़िते पएर......।

हिला-डोला हिलोरि-हिलोरि
किनछड़ि कोण पकड़ए लगै छै।
तड़पि-तड़पि तड़पन करैत
ठौर अपन धड़ए लगै छै।
पड़िते पएर......।

अहाँ किअए......

अहाँ किअए रूसल छी हे बहिना
अहाँ किअए रूसल छी हे।

हल-चल, हल-चल
सभ दिन करै छी
चल-हल चल-हल
कहाँ पाबि पबै छी
तैयो अहीं मगन
कानि-हँसि कुचड़ै छी
कानि हँसि......।
अहाँ किअए......।

राति दिन एकबट्ट बनौने
सभकेँ सभ लागल रहै छी।
लागि भीड़ कियो, भीड़ लागि
रमझौआ करैत छी हे
रमझौआ......।
अहाँ किअए......।

घट-घट घोंट......

घट-घट घोंट घोटै छै
मीत यौ, घट-घट घोंट घोटै छै।

तरसैत-तरपैत तनतनाइ छै
तन-फन मन भनभनाइ छै
हक-हका, हकहका कहै छै
अपनमे दरकार धड़ै छै।
घट-घट......।

अपन माइन एकबट्ट मानि
हँसमुँह मन मुस्की भरै छै।
मन-सम्मान, समान मान
तानि छाती समवाण तनै छै।
तानि छाती......।

जे चिन्हत तेकरे ने चिन्हबै
बीच-बीच बिचमानि बजै छै।
धर्म सनातन ठुमकि-ठुमकि
राति-दिन परिछान करै छै।
राति-दिन......।
मीत यौ, घट-घट घोंट घोटै छै।

जहिना बारह......

जहिना बारह दिन बजैत
तहिना ने रातियो कहै छै।
बीच-बिचौबलि बीछि-बेड़ा
दुनूमे समतूल भरै छै।
दुनूमे......।
जहिना बारह......।

जेठक बारह नम-नमड़ि
बारह राति पटिअबै छै।
मघजल्ला पसारि-पसारि
हार जाड़ बढ़िअबै छै।
हार जाड़......।
जहिना बारह......।

कखनो बाम दहिन घुसुकि
दुनू दिस कपचैत रहै छै।
निखरि-निहारि नहि देखि
झपकी-लपकी सहैत रहै छै।
झपकी-लपकी......।
जहिना बारह......।

दुनियाँ घोड़ाएल......

दुनियाँ घोड़ाएल छै निशाँमे
घट-घोट घोटैत कहै छै।
सुखचन-दुखचन कुहि-कुहि
भटैक-भटका मारैत रहै छै।
भटैक-भटका......।
दुनियाँ घोड़ाएल......।

सुख-चैन सोचि-असोचि
सुखल धार बहबैत रहै छै।
काँट-कुश बना बना
धार-धड़ि धड़बैत रहै छै।
धार-धड़ि......।
दुनियाँ घोड़ाएल......।

सुखल-टटाएल रसाएल जिनगी
रसाएल जीव कहबए लगै छै।
भुख-पियास पचि-पचा
सार-वेद गाबए लगै छै।
सार-वेद......।
दुनियाँ घोड़ाएल......।

बहलि बहील......

बहलि बहील बहिला कहै छै
आश हमर कहियो नै करिहह
फुलकि-फलकि ढेनु-ढेनुआरक
तोड़ि आश तेकरो रहिहह।
बहलि बहील......।

बहलि मन दहलि-दहलि
बाँझ गाछ धड़ैत रहै छै।
पकड़ि डारि डोला-डरा
लस्सा लोल छोड़बए लगै छै।
लस्सा लोल......।
बहलि बहील......।

लटपट-सटपट बझ-बझीन
गीत वधैया गाबि कहै छै।
ता धीन ताधीन धीन ता धीन
सूर-तान टहिआए लगै छै।
शूर-तान......।
बहलि बहील......।

हलचल जिनगी......

हलचल जिनगी हलसि-खिलचि
हर-हरि चालि चलै छै।
बीर्तमान भविष्य कहि-सुनि
भूत-बंगला सजबै छै।
मीत यौ, भूत-बंगला सजबै छै।
हलचल......।

जहिना आनक पोखरि डरान
अपनो गाछी कहबै छै।
अधसर-अधमर पोखरि सृजए
जम-जजमान फफनै छै।
मीत यौ, जम-जजमान फफनै छै।
हलचल......।

भाग बैसि एक वीणा-धारणी
बहिना बाँहि पकड़ै छै।
वाम-दहिन चालि चलि-चलि
धाम-काम धड़बै छै।
मीत यौ, धाम-काम धड़बै छै।
हलचल......।

टकटक ताक......

टकटक ताक तकै छी हे मइये
आहाँ किअए आँखि मुनने छी।
गड़-गड़ गाल गबै छी मइये
तखन किअए कान खोलने छी।
तखन......।
टकटक......।

जन-मन-धन धियानए मइये
छी छूटि, केना जाइ छी।
डारि-पात अमृत भरि-भरि
विष-रस केना बनै छी।
विष-रस......।
टकटक......।

कन-कन मणि मन-मन मइये
अन्हार किअए छोड़ै छी।
रचि अन्हार इजोत-जोत
तखन एना किअए विषविषबै छी।
एना किअए......।
टकटक......।

भीख मांगि......

भीख मांगि दुनियाँ भिखारी
दानी शिव कहबै छी यौ।
हे यौ भोलानथ
दानी शिव कहबै छी यौ।

राति-दिन समैट-समटै छी
भीखमंगा कहबै छी यौ
धड़ि भीख धारा बनै छी
धार भीख बहबै छी यौ
धार भीख......।

शिखर सिर अकुर-सकुर
चोटी सिर पकड़ै छी यौ
धार बनि धड़ा-धड़ा
पहुँचि समुद्र धड़ै छी यौ।
पहुँचि समुद्र......।

हे यौ भोला बाबा
पहुँचि समुद्र धड़ै छी यौ।

बकरी खुट्टी......

बकरी खुट्टी खुटेस-खुटेस
जिनगीक जिनगी पाठ पढ़ै छै।
कुन्ज भवनमे लाल बिहारी
लीला रचि-रचि रास करै छै।
लीला रचि.....।

रंग-बिरंगक पात खुआ
रस अमरीत चुसबैत रहै छै।
मनक मक्खन चोरि-छोड़ि
गरदनि बान्ह पड़ैत रहै छै।
मीत यौ, गरदनि......।

बीर्त रहितो बकरी जेना
साँढ़-धाकर कहैत रहै छै।
मनहाएल-मनहाएल रहितो
कुरीति-रीति गबै छै।
मीत यौ, उरीति......।

अमरा अँचार......

अमरा अँचार चटै छै
मीत यौ, अमरा अँचार चटै छै।

अमौर-मौर बनि बना
अबिते रस बदलै छै।
पानि जीह पाबि पनिया
चहटि चुहुटि धड़ै छै।
मीत यौ......।

जेहने फड़क रंग-रूप
तेहने ते पातो धेने छै।
नमहर-नमहर गीरह-गाँठ
बिनु गिरहेक डारि पकड़ै छै।
मीत यौ......।

चटिते अचार अम अमड़ि
अमरजोत देखै छै।
जीवन जन छोड़ि-मोड़ि
मरण वाणि पकड़ै छै।
मीत यौ......।

घरे-घरे......

घरे-घरे ज्योति दीप
गाम अन्हार पड़ल छै।
घरे-घर समाज कहि-कहि
अध-मरल गाम पड़ल छै।
अध-मरल......।

इतिहास मिथिला कहि
पुर जनक धाम बनल छै।
वक्र आठ गीत गाबि
ज्योतिरमान जगै छै।
ज्योतिरमान......।

बनि कनियाँ-पुतरा कठपुतरी
मूक नाच नचैत रहै छै।
राति-दिन एकबट्ट बरहबट बनि
नाचि नाच नचैत रहै छै।
नाचि नाच......।

बेटी किअए......

बेटी किअए बनेलौं, शिव यौ
बेटी किअए बनेलौं।
भूख पेट दुख बनि बना
हमरे किअए सजेलौं
हमरे किअए......।

सजि साजि सिर सजा
दोखाह जिनगी किअए बनेलौं
किछु ने कामना मनमे ठनने
एहेन किअए बनेलौं।
बेटी किअए......।

मन-मन माली बैसल छै
मालिन किअए बनेलौं
मन-मलिन मुँह कानि-कानि
बेटी किअए बनेलौं।
हे शिवदानी हे बमभोला
बेटी किअए बनेलौं।

मनक भाव......

मनक भाव समेटि-समेटि
मनोभाव पनपए लगै छै।
सुभाव अभाव कुभाव भव
रूप रंग सजबए लगै छै।
रूप रंग......।

महकि महि परखि निखारि
भवन भव सिरजए लगै छै।
उक-भाव लपकि लपाक
बिन भावुक सजबए लगै छै।
बनि भावुक......।

भाव-भावुक रमैक-चमैक
भाव लोक सिरजए लगै छै।
आनन कानन मानन मानि
भवानन कहबए लगै छै।
भवानन......।

सिरजन सिर......

सिरजन सिर पकड़ि-पकड़ि
जड़ि धरती धड़बै छै।
पति-पन पाँति पतिया
उपवन-वन सजबै छै।
भाय यौ, उपवन......।

सजिते वन उफनि उपनि
धरती धार बहबए लगै छै।
सुध-असुध कहि सुनि-सुनि
घटि-बढ़ि घाट बनबए लगै छै।
भाय यौ, घटि-बढ़ि......।

कोने-कानी खूटि-खूटि
धोबि घाट सेहो बनबै छै।
निरजन, निरमल बसि-बसु
हारि-जीत दुनियाँ कहै छै।
भाय यौ, हारि-जीत......।

दूधक भूखल......

कनि-कनि कानि कहै छै।
कनी-कनी कान पकड़ि-पकड़ि
कर्ण-अंग धड़ैत रहै छै।
निरलोभ, निसकपट बनि-बनि
अखंड बनि बसैत रहै छै।

रंग-रंग कनजरि बनि वन
रंग-रंग मुँह धड़ैत रहै छै।
रंग-रंग गुनि गुन सुनि
फलाफल छिटकैत रहै छै।
कनि-कनि......।

जड़ि कोनो फल फलागम
फुलहरि कोनो झड़ैत रहै छै।
जड़ि-जड़ि कनकि-कनकि
कलश-पल्लव भरैत रहै छै।
अपेछित, पल्लव कलश भरैत रहै छै।

संगे-संग......

घरक नाओं संगे गड़ा गेल
मीत यौ, ई गड़बड़ भेल उ गड़बड़ भेल?
नै यौ, हँ यौ, हँ यौ, नै यौ, हँ....।
ई गड़बड़ भेल, उ गड़बड़ भेल।
घरक नाओं......।

अदलि नीक बदलि अधला
अदलि-बदलि बदला गेल।
गारा गर पकड़ि-पकड़ि, मीत
गारा घेघ बनबैत गेल, मीत यौ.....।
घरक नाओं......।

बाम दहिन बिनु बुझने-सुझने
छटि बाम बूच छटिया गेल।
डाली कसतारा सजि सजबए
ई अधला भेल, मीत यौ ई अधला भेल।
घरक नाओं......।

चोटी छुबै......

चोटी छुबै जखन चट-चटिया
चटिया चाट चटैत रहै छै।
जीनगानिक रंग रभससँ
सुर जिन्दादिली भरैत रहै छै।
चोटी छुबै......।

बून-बून अकास बनि-बनि
धड़-धरती छुबैत रहै छै।
चूह चुहुटि साटि सटि छाती
दूध-फूल बनबए लगै छै।
चोटी छुबै......।

करम-धरम खेल सिर सिरजै
नचनी नाच नचैत रहै छै।
बाट-बटोही पकड़ि-पकड़ि
मूंगबा मुँह बिलहैत रहै छै।
चोटी छुबै......।

खेल-खेलाड़ी……

खेल खेलाड़ी खेल ठानि
कबडी दौड़ दौड़ैत एलैए।
सीमा बान्हि भौक भौकिया
छुबि-छुबि छुतबैत एलैए।
छुबि-छुबि छुतबैत एलैए।
खेल-खेलाड़ी……।

नमगर-चौड़गर परती पराँत
नमहर डेग डेगैत एलैए।
आम छी, जाम छी, करिया लताम छी
साँस छोड़ि रेड़ैत एलैए।
साँस छोड़ि रेड़ैत एलैए।
खेल-खेलाड़ी……।

एक साँस चेत कबड्डी
चीका-दरबर करैत एलैए।
भौक बनि भोकिया-भोकिया
छुबि-छुबि छुतबैत एलैए।
छुबि-छुबि छुतबैत एलैए।
खेल-खेलाड़ी……।

धरती खुनि-खुनि मुदा एहनो
अखड़ाहा बनबैत एलैए।
माटि संग हाथ मिल-मिला
वीर भूमि सिरजैत एलैए।
वीर भूमि सिरजैत एलैए।
खेल-खेलाड़ी……।

ककोड़बा......

ककोड़बा बिआन ककोड़बे खाइ छै।
मीत यौ, ककोड़बा बिआन ककोड़बे खाइ छै।

बिनु सिर-पएर सजि-सजि
चुट्टा-चांगुर चुहुटए लगै छै।
अपने सिरजल-जल्ला-झल्ला
खद-खुद डिरिआए लगै छै।
ककोड़बा......।

खखैर-खखोड़ि खखरी बनि
दन-दनाइत कहैत रहै छै।
माटि-पानि सभ हमरे-हमरे
कुम्हरा ढेर बनबैत रहै छै।
मीत यौ, कुम्हरा ढेर बनबैत रहै छै।
ककोड़बा.......।

जेर निकलि जड़िया-जेड़िया
पाछू पेट छिछियाए लगै छै।
कतए जाएब कतए जाइ छी
ठेकाने नै रहि पबै छै।
मीत यौ, ठेकान नै रहि पबै छै।
ककोड़बा......।

सोर बनि.....

सोर बनि सन्हिया सान्हि
सिर चालि चलए लगै छै।
सिर-सिरा सिरसिरा चुहटि
बत-बता बतबए लगै छै।
बत-बता बतबए लगै छै।
सोर बनि......।

फुलहरि फूल फड़ फलहरि
बड़गद विरीछ बनए लगै छै।
कट्ठा-कहि नट्ठा बनि-बना
सघन-घन धड़ए लगै छै।
घन सघन धड़ए लगै छै।
सोर बनि......।

पकड़ि मूस मुँह मुसका
शील-सिनेह सिरजए लगै छै।
पकड़ि पूछ पुछड़ी पकड़ि
घाट-घट घटबए लगै छै।
घाट-घट घटबए लगै छै।
सोर बनि......।

कूट चित्र घट-घट घटा
पौरुष-पुरुष गढ़ै लगै छै।
कूट कुटि कूटि-पीस
सिरखणि सिर गढ़ए लगै छै।
सिरखणि सिर गढ़ए लगै छै।
सोर बनि......।

सेज-सिंगार……

सेज सिंगार सजि साजि-साजि
साध सत् धड़ए लगै छै।
दूर-दूर दुरगम दृग दृश्य
सोरहा सोर करए लगै छै।
सेज-सिंगार……।

बनिते दहाइ एकाइ बदलि
सिज फूल सिंगार धड़ै छै।
बाल-भाल लीख-लीख ललाट
धार जिनगी कुदए लगै छै।
जिनगी धार बहए लगै छै।
सेज-सिंगार……।

सोर पकड़ि शोर सोर शोर
सोड़ह सोरहा करए लगै छै।
जिनगीक टपान टपिते टपैत
दोहरी सेज सजए लगै छै।
दोहरी सेज सजए लगै छै।
सेज-सिंगार……।

बदला-बदली करए धन-धेनु
धाम-काम कहबए लगै छै।
मिथि मालिन मन मलि-मलि
मिथिलांगना कहबए लगै छै।
मिथिलांगना कहबए लगै छै।
सेज-सिंगार……।

जएह लूरि.....

जएह लूरि-बुधि मन पकड़ए
तेहने टा जिनगी भाय यौ।
नगर नजरि निहारि-निहारि
अराधि राखि जिनगी ठनियौ।
अराधि राखि जिनगी ठनियौ।
जएह लूरि......।

लूरि-बुधि गरजोड़ बनि-बनि
गरदनि-खूटा मिलैत रहै छै।
एक रक्षक एक भक्षक बनि
अमृत रस भरैत रहै छै।
अमृत रस भरैत रहै छै।

रंग-रंग फूल माला मालिन
मुसुकि मुँह कली कलिआइ छै।
मालिन माला गढ़ि-मढ़ि
छत माली छतिया सजै छै।
छत माली छतिया सजै छै।
जएह लूरि......।

जोति हर......

जोति हर हरबाह हकड़ि
जिनगीक गीत गबै छै।
ले-ऊँच, ऊँच ले बनि वन
चोटी-ढाल बनल छै।
गे भौजी, चोटी......।

बून पपीह स्वाती पकड़ि
रस अमृत भरैत चलै छै।
कृत्ति-वृत्त परकृति पकड़ि
तरे-ऊपरे सिर सजै छै।
गे भौजी......।

लत्ती बनि लतड़ि-पसरि
लतमरदन करैत रहै छै।
चोटी जल टघड़ि-टघड़ि
खून पसीना एक करै छै।
गे भौजी......।

ओहए पानि टघड़ि-टघड़ि
झील-सरोवर सेहो सजै छै।
बाल-भाल कुशक कलेप
मरू स्थल गढ़ैत रहै छै।
गे भौजी......।

हर हलक......

हर हलक हलन्तमे
मीर-दोल तेहल बनै छै।
पुर-पुष्कर पुरस्सर
बाट-घाट घटबी चलै छै।
हल-हलक हलन्तमे...

एक-दू-तीन चारि रहितो
गति इंजीन गाड़ी धड़ै छै।
बेहिसाब-हिसाब बनि बन
धड़ि धड़कि धड़ैत रहै छै।
धड़ि धड़कि......।

लंक-अयोधिया सटि-हटि
संगी-संग चलैत रहै छै।
निरशि परखि बाट-बटोही
फल करनी भोगैत रहै छै।
फल करनी......।

ह्मि-गिरि......

ह्मि-गिरि उत् उतूंग उमड़ि
निरमल अमृत धार बहै छै।
सिख-शिखर सिहैर-सहैर
गंग अकास बहैत रहै छै।
गंग अकास......।

उतरे-दछिने धड़ैन धार
शिखर-सगर देखबै छै।
रंग-रंग फूल माल सजि
मन गंग साजि सजै छै।
मन गंग......।

हटि-सटि, सटि-हटि बैस-वेस
सागर-शिखर धड़ैत रहै छै।
गंग-अकास उतरि-उतरि
गंग-अकास......।

भुवन भूचलि......

भुवन भूचलि अकास
रंग-रंग तारा सजै छै।
तीन मिलि डंड तराजू
सभक तौल-मपैत रहै छै।
सभक......।

कखनो दायाँ वायाँ कखनो
कीर-किरदानी करैत रहै छै।
तेकठीक आस बिनु पौने
उदय-अस्त करैत रहै छै।
उदय......।

सातो सगर देखि सतभैंया
कचबच बचकच करैत रहै छै।
भोर होइत भहड़ि-भड़ड़ि
थकथका थकथका सेज सजै छै।
थकतका......।

खुजिते आँखि......

खुजिते आँखि तड़पि तड़पि
पृथिवी पग पएर पड़ै छै।
धरती-अकास बीचो-बीच
खम्भ भेल देखै छै।
खम्भ......।

अकास अमरीत बरसि
खोंइछ धरती भरैत रहै छै।
आसा-आस मिलि बैसि
बरहमासा गबैत कहै छै।
भाय यौ, बरहमासा......।

पर-वत बत-पर संग-संग
हेल समुद्र हेलैत रहै छै।
बालु ऊपर ढेर-बनि वन
ढुइस हेल हेलैत रहै छै।
मीत यौ, अहींकेँ कहै छै
ढुइस......।

मुड़जन मनुहर......

मुड़जन मनुहर पकड़ि-पकड़ि
तान विरूदावली तनै छै।
दोहन-दौजी कुदि-चमकि
रचि-रचि रास रचै छै।
संगी, रचि-रचि......।

मुसुक मुसकी मसकि-मसकि
कन-आनन अनैत रहै छै।
नेंगरा-लुलहा, जरल-मरल
बेणु-वन वीणा तनै छै।
संगी, वेणु-वन......।

शूर-सूर, मूड़ मुड़ि-मूड़ि
पग-प्रेम पबैत रहै छै।
लट्टा-चूड़ा, खट्टा दही
भोज ब्रह्म गाबि कहै छै।
संगी, ब्रह्म......।

गोधूलि-बेल......

गोधूलि-बेल डगर डगरि
थन-माइक थुथुन थुथबै छै।
आस सूर्ज असतन पाबि
तर-ऊपर चमकए लगै छै।
तर-ऊपर......।

अबैत करूआएल काल देखि
पग-पगहा पाछू घीचै छै।
पाँचम पहर पहल पहीर
रग-रग रंग रगड़ए लगै छै।
दीब साँझक दिव्य पाबि
सगुनियाँ कहबए लगै छै।
सगुनियाँ......।

राति दबा दबदबाइत प्रभा
भोर-भुरुकबा जगबै छै।
दुर-दुरा, दुर-दुरा दूर
प्रात सूर्ज घीचने अबै छै।
प्रात सूर्ज......।

दौड़ि-दौड़......

दौड़ि-दौड़ दाउर घोर-घन
बाट नहि भेटै छै।
कारी-भारी भारी करि-करि
अन्ह घाट बनबै छै।
अन्ह घाट......।

अन्हार घर साँपे-साँप
विसविसाह बनबै छै।
इजोतो अनरोख भऽ भऽ
घोर-घनघोर करै छै।
घोर-घनघोर......।

लीला बड़ लीलाधर बड़-बड़
राशि रास रचै छै।
मत् मन मत मत-मत
मस्ती चालि धड़ै छै।
मस्ती चालि......।

चोट-चाट......

चोट-चाट चोटिया देलकै
मुँह-नाक भसका देलकै।
चोट-चाट......।

कान कनक छीनि-वीनि
बहीर बौक बना देलकै।
नाक-मुँह-कान ताकि
चोट-चाट चोटिया देलकै
चोट-चाट......।

बहीर-बौक मिलि-मिलि
मलि आँखि मसका देलकै।
गन्ह महक महक गन्ह
दिन-राति गनहा देलकै।
दिन-राति......।

साँझ बेला वेली फूलि
भोर-भुरुकवा कहै छै।
रातु पार खेपि-खेप
पाट सन धड़बैत चल छै।
पाट सन......।

चाइन चेन.....

चाइन चेन थर-थीर थितिते
चान-मुँह मुस्की भरै छै।
हास-परिहास अट्टाहास
लोक सूर्ज पहुँचए लगै छै।
लोक सूर्ज......।

तन-तना तक ताकि तरेगन
हिया-हिया देखैत रहै छै।
रंग एक रोशनाइ आनि
लालटेन राति गढ़ैत रहै छै।
मीत यौ, लालटेन......।

असिते-अस्त सुधा ज्योति
साँझ पहिल अनघोल करै छै।
बनि सगुनियाँ तार-तारा
आगूक दम्भ भरैत रहै छै।
आगूक दम्भ......।

दीनक दोख......

दीनक दोख कहै छी हे बहिना
दीनक दोख कहै छी।
बात-बात बतिया कतिया
हटि-हटि हाट हटै छै।
बत-रग्गर रगड़ि-रगड़ि
पीसि पीस पीबै छै।
हे बहिना, पीसि-पीस......।

घरे-अंगने बीज कोढ़ीक
छीटि-गाड़ि रोपैत रहै छै।
फूल कोढ़िक फलक तेहने
जिनगी पाठ पढ़ैत रहै छै।
हे बहिना, जिनगी......।

निशाँ पीब नस-नस नसिया
निशाएल घाट तकैत रहै छै।
रातिक हारल दिनक मारल
जिनगी गीत गबैत रहै छै।
हे बहिना, जिनगी......।

सगर समन्दर......

सगर समनदर सड़ि सरित
तन-मन आस सिरजै छै।
दुर्गा देवी हे माँ काली
असतन आस धड़बै छै।
मीत यौ, असतन आस......।

थन तन मन पशु धन
परबत सीस सजबै छै।
ढेर धार ढेरिआएल घाट
मन मनु माँ कहबै छै।
मीत यौ, मन मनु......।

पाश बैसि बसिया बुलकि
जिनगी तानि नचै छै।
हे माँ, नगर बीच रीति-रीत
सती-सावित्री पुछै छै।
मीत यौ, सगर......।

चप-चप......

चप-चप चपचपा चपा
चपचपाइत चाप चपा गेलिऐ।
धार पेट चप-चपीमे
तकित्ते ताकि तरिया गेलिऐ।
मीत यौ, तकित्ते......।

चपचपाइत मन धकधकाइत तन
काप कपैत कतिया गेलिऐ।
ओलनि-छोलनि घर जहिना
भीत्ता धार भितिया गेलिऐ।
मीत यौ, भीत्ता......।

उठिते पूरबा पच्छिम चलि
पछिया पूब चलिया गेलिऐ।
चप-चप चपचपा चपा
खस्सिया खर्ग टंगा गेलिऐ।
मीत यौ, खस्सिया......।

मारी-बेमारी......

मारी-बेमारी के कहए
महामारी बीच पड़ल छै।
के केकरा कहतै-सुनतै
आने-आन धड़ाएल छै।
भाय यौ, आने......।

पानि जरि अगिया आगि
रस रसराज पबै छै।
केकरा कहबै, कहि के सुनतै
खट-रस रस भरल छै।
भाय यौ, खट......।

खट्टर कका केर खटरास
खिया-खिया कटकटाएल छै।
मजनी रगड़ि-रगड़ि खरकिट्टी
सेनुर-सोहाग बुलबलाएल छै।
भाय यौ, सेनुर......।